जिस प्रकार व्यक्ति के शरीर को त्वचा घेरे रहती है।

संगठन के नियम

प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन गेस्टाल्टवादी वर्दाईमर, कोहलर, कोफ्का ने यह स्पष्ट किया कि उद्दीपक का प्रत्यक्षीकरण संगठित रूप में होता है जबकि उसके अनेक अवयवों का प्रत्यक्षीकरण हमेशा सहजता एवं सुन्दरता की ओर अनुभव होता है। मनोवैज्ञानिकों ने इसे प्रैग्नाज का नियम कहा है। इनमें प्रत्यक्षीकरण में हमेशा नियमितता, सहजता एवं एकता पायी जाती है।
प्रैग्नाज के भी स्पष्टीकरण के दो नियम हैं —:

(A) परिधीय नियम :- जो नियम सीधे उद्दीपक से संबंधित होते हैं उन्हें परिधीय नियमों की श्रेणी में रखा गया है। उद्दीपक के गुणों से सम्बन्धित सभी नियम जन्मजात होते हैं न कि अर्जित किये जाते हैं। यह नियम हैं — :

(i) समीपता का नियम :

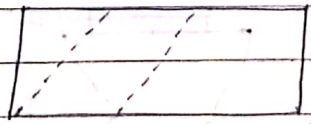

इस नियम के अनुसार जो उद्दीपक दूसरे उद्दीपक से समय या स्थान में नजदीक होते हैं उन्हें व्यक्ति आपस में संगठित कर प्रत्यक्षीकरण करता है। और उन्हें एक स्पष्ट आकृति के रूप में देखता है। इस चित्र के माध्यम से समझा जा सकता है कि कुछ बिन्दु पास-पास होने के कारण पंक्ति में दिखाई देते हैं।

ii समानता का नियम :-

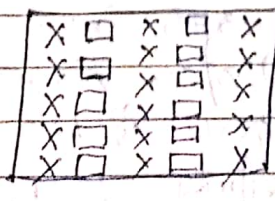

इस नियम के अनुसार जो उद्दीपक एक दूसरे के समान होते हैं, उनका व्यक्ति एक साथ संगठित रूप से प्रत्यक्षीकरण करता है।

X	□	X	□	X
X	□	X	□	X
X	□	X	□	X
X	□	X	□	X
X	□	X	□	X

जैसा कि निम्न चित्र में क्रास तथा वर्ग संगठित होकर कालम का प्रत्यक्षीकरण कराते हैं।